द्वितीय अध्याय

तुलसी के उपास्य राम

द्वितीय अध्याय

तुलसी के उपास्य राम

जनमानस का कल्याण करनेवाले महात्मा पुरूष इस संसार में नित्य ही शरीर नहीं धारण करते। संसार में उनका आविर्भाव समयानुसार ही होता है। जैसे धर्म की हानि होनेपर अधर्म को बढावा मिलनेपर और सज्जनों को कष्ट पानेपर भगवान अपनी शक्ति का एक अंश महात्माओं को देकर, समाज की, देश की तथा विश्व की उलझानों की सुलझाने के लिए इस संसार में उन्हें भेज देता है। इन्हीं के द्वारा समाज का मंगल कियाजाता है। ऐसे महापुरूषों के रूप में तुलसीदासजी भी इस भारतभूमिपर अवतीर्ण हुए थे।

सगुणवादी भक्त किसी न किसी ईश्वर को अपना आराध्य मानते हैं। कोई भक्त शंकर को अपना उपास्य मानते हैं, तो कोई गणेश को, कोई दुर्गामाता को तो कोई कृष्ण को उपास्य मानते हैं। उसीप्रकार तुलसीदासजी भी सगुण भक्त थे इसलिए उन्होंने रघुवीर रामचन्द्रजी को उपास्य माना था। इसके संदर्भ एक दोहा प्रचलित है -

> " जासु कथा कुंभज ऋषि गाई। भगति जासु मैं मुनिहिं सुनाई।।
> सोइ मम इष्टदेव रघुबीरा। सेवक जाहि सदा मुनि धीरा।।"[१]

इसप्रकार तुलसीदासजी ने राम को ही उपास्य माना था किसी अन्य ईश्वर को नहीं।

तुलसीदासजी की समकालीन परिस्थिति में समाज के हर स्तर का व्यक्ति कर्तव्यच्युत हो गया था और वह केवल अपने ही बारेमें सोचता था। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि वह स्वार्थ केंद्रित और सामाजिकता की भावना से विरहित बन गया था और आनेवाली दुरवस्था के लिए केवल दैव की

आलोचना करता था । इसलिए ऐसी अवस्था में जनसाधारण को वैयक्तिक और सामाजिक कर्तव्य के प्रति जाग्रत करने के लिए और उसके साथ-साथ उनके कर्तव्य की जागरूक बनाने के लिए तुलसी के सामने पूर्णत: नि:स्वार्थ, कर्तव्यनिष्ठ, विकाररहित, उदारमनस्क, शीलवन्त, निर्भय और दैवी गुणों से युक्त व्यक्ति का आदर्श समाज के सामने रखना आवश्यक था । समाज में जब ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है तभी विश्व को ऐसे ईश्वर की आवश्यकता होती है, जो दीन-दु:खियों की आर्त पुकार सुन सके, अधर्म का नाश करके धर्म की रक्षा कर सके । ऐसी अवस्था जब समाज में उत्पन्न होती है, तभी अवतारी पुरुष जन्म लेते हैं । जैसे हम देखते हैं कि महाभारत में श्रीकृष्ण के बारेमें कहा गया है -

` यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवती भारत ।
अभ्युत्थानम अधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ।।
परित्राणाय साधूनां विनाशायच दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ।। `[2]

इसप्रकार ` गीता ` में जैसा श्रीकृष्ण के अवतार के बारेमें कहा गया है उसीप्रकार तुलसीदासजीने भी राम के बारेमें अपने ` रामचरितमानस ` में कहा है -

` जब जब होइ धरम कै हानि । बाढहि असुर अधम अभिमानी
करहि अनीति जाई नाहिं बरनी । सीदहिं बिप्रधेनु सुरधरनी
तब तब प्रभु धरि बिविध सरीरा । हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा ।`[3]

इसप्रकार सभी अवतारी पुरुषों का आविर्भाव ऐसे ही संकट के समय होता है । वैसे देखा जाये तो उस वक्त हमारे सामने श्रीकृष्ण का आदर्श था ही लेकिन उनके पूर्ववर्ती और समकालीन कवियों ने कृष्ण-चरित को रंजक बनाने के लिए शृंगारी नायक के रूप में उसे चित्रित किया था । श्रीकृष्ण के इस

शृंगारी, विलासी रूप का प्रभाव समाज के मन पर इतना जबरदस्त हुआ था, कि उसको समूल नष्ट करने के लिए सैकडों वर्ष के बीत जाते। इसलिए तुलसीदासजी ने उस समय समाज की आवश्यकता को देखकर मर्यादा पुरूषोत्तम राम का ही चरित्र समाज के सामने प्रस्तुत किया। राम का यह रूप लोकरक्षक है, न कि लोकरंजक।

3 तुलसीदासजी ने राम को ही अपना उपास्य इसलिए माना कि समाज को निरंतर उसके कल्याणार्थ लोकरक्षक रूप की आवश्यकता अधिक होती है न कि लोकरंजक रूप की। राम ही एक ऐसे अवतारी पुरूष हैं, जो लोकहित के लिए सबसे प्रमुख हैं। इतना महान आदर्श अब तक इतिहास में देखने को नहीं मिलता। उनका आदर्श ही ऐसा है, कि उसके द्वारा भावनाओं को आंदोलित करने का काम किया जाता है। इसका कारण यह है कि मनुष्य हमेशा सुख, संतोष और शांति चाहता है और राम के चरित-गान से यह शांति मिलती है। राम सब के दु:खोंका नाश करनेवाले आदर्श राजा, आदर्श पुत्र, आदर्श भ्राता हैं,आदर्श पति, आदर्श शिष्य हैं और सब से महत्वपूर्ण रूप है उनका मर्यादापुरूषोत्तमत्व। सगुण भक्तों के लिए राम भगवान हैं, तो निर्गुण भक्तों के लिए परब्रम्ह हैं। ऐसे रामचरित के द्वारा समाज में परिवर्तन लाने के लिए और `सर्वजनहिताय` तुलसीदासजी ने आदर्श पुरूष राम को उपास्य के रूप में समाज के सम्मुख उपस्थित किया।

तुलसीदास सगुण और निर्गुण में भेद नहीं मानते, तब भीउन्होंने सगुण को स्वीकार किया है। वे सगुणोपासक इसलिए बने कि सगुण ब्रह्म जब मानव रूप में अपना चरित्र उपस्थित करता है, तो मनुष्यों के लिए उसके अनुकरण की प्रेरणा प्राप्त होती है। निर्गुण ब्रह्म का वर्णन ज्ञान से चाहे जितना हम कर सके, उसके द्वारा समाज में उत्पन्न होनेवाली बुराई को दूर नहीं करना था। उनको सगुण रूप इसलिए प्रिय है क्योंकि सगुण रूप के बिना

निर्गुण रूप का निरूपण उसीप्रकार असंभव है, जैसे अन्धकार का ज्ञान प्राप्त किए बिना प्रकाश का निरूपण असंभव है। दोहावली में उन्होंने इसके बारे में कहा है -

` ग्यान कहै अग्यान बिनु तम बिनु कहै प्रकास।
निरगुण कहै जो सगुन बिनु सो गुरु तुलसीदास ।। `[४]

तुलसीदासजी ने सगुण रूप के बारेमें ` विनयपत्रिका ` में कहा है कि सगुण रूप में राम धर्म की मर्यादा है, वे सुर, नर और ब्राह्मण धर्म के रक्षक हैं। इसलिए उन्हें सगुण रूप प्रिय है।

गोस्वामी तुलसीदासजी के सगुण होने का और एक कारण है। उनके समय राजनीतिक असंतोष था और राजनीति के लिए निर्गुण ब्रह्म के द्वारा कुछ किया नहीं जा सकता था। क्योंकि उसे केवल ज्ञान से ही जाना जा सकता है उसके द्वारा अनुकरण नहीं किया जा सकता। अनुकरण सगुण से किया जा सकता है। वे सगुणोपासक थे इसका कारण यह नहीं कि सगुण-भक्ति को लोग गण्य मानते हों या सगुण भक्ति निर्गुण भक्ति की अपेक्षा अधिक सहज हो।

` निर्गुन रूप सुलभ अति सगुन जान नहिं कोई ।
सगुन अगम नाना चरित सुनि मुनि मन भ्रम होइ ।। `[५]

तुलसीदासजी की आकांक्षा राजा संबंधी जो कल्पना थी वह सगुण से ही पूरी हो सकती थी। वे कृष्णभक्त इसलिए नहीं हुए कि कृष्ण के चरित्र में उन्हें राजत्व उतना नहीं दिखाई दिया, जितना रसिकत्व।

तुलसीदासजी ने राम को ही अपना उपास्य इसलिए बनाया, कि उनके राम में उदारता, अन्तःकरण की विशालता और भारतीय चारित्रिक

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

आदर्श की साकार प्रतिमा है। तुलसी ने राम के रूप में भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता की ऐसी आदर्शमयी जीवन्त प्रतिमा प्रतिष्ठित की है, जो विश्वभर में अलौकिक, असाधारण, अनुपम एवं अद्भुत है। जो धर्म एवं नैतिकता की दृष्टि से सर्वोपरि है। इसमें त्याग, विराग एवं साधु-प्रकृति के साथ-साथ लोकहित और मानवता का साकार रूप विद्यमान है। तुलसी के राम एक आदर्श पुरुष ही नहीं हैं, अपितु वे एक महान व्यक्तित्व सम्पन्न नायक हैं, जिनका महत्व कवि के साथ-साथ पाठकों एवं श्रोताओं के मन:चक्षुओं के सामने आज तक अधीष्ठित है। उनके देवत्व पर मुग्ध होकर, उनकी पुण्य किरणों से पाप रहित होकर सभी प्राणी राम के सामने नतमस्तक होकर प्रणाम करते हैं।

तुलसीदासजी के उपास्य राम के बारेमें डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना लिखते हैं - ' तुलसी के राम बुध्दिमान, धर्मज्ञ, यशस्वी प्रजाहितैषी, धर्मरक्षक, सत्यसन्ध, लोकप्रिय, बलिष्ठ, शत्रुजयी, महान त्यागी, धैर्यवान, प्रियदर्शी, शील-शक्ति सौंदर्य के अगाध भण्डार, धर्मात्मा एवं उच्चतम आदर्श के प्रतीक हैं। वे विश्वरूप होकर भी मानव हैं और मानव होकर भी परब्रह्मस्वरूप है। तुलसी ने राम को मानव एवं ब्रह्म दोनों रूपों में चित्रित कर एक मानव की महत्ता एवं गुरुता का अच्छा निरूपण किया है। इसलिए राम निस्संदेह आदर्श के उच्चतम शिखर पर प्रतिष्ठित मानव हैं।'[६]

तुलसीदासजी राम के स्थान पर किसी अन्य देवता को नहीं मानते, क्योंकि राम के प्रति ही वे एक निष्ठ हैं। लेकिन अन्य देवताओं की स्तुति वे अवश्य करते हैं। ' रामचरितमानस ' के बालकाण्ड में हम देखते हैं कि उन्होंने अन्य देवताओं का निश्चल गुणगान किया है। परंतु वे राम की सत्ताको ही सर्वत्र व्याप्त मानकर चलते हैं। तुलसीदासजी की राम के प्रति जो एकनिष्ठता है, उसका वर्णन उनकी ' दोहावली ' में चातक संबंधी पदों में मिलता है जैसे -

9655
A

` तुलसी चातक माँगनो एक सबै घन दानि ।
देत जो मूभाजन मरत लेत जो घूँटक पानि ।। `७

चातक की प्यास बुझाने के लिए ` स्वाती ` नक्षत्रमें जो वर्षा होती है वह सिर्फ चातक की प्यास बुझाने के लिए ही नहीं होती बल्कि इसववर्षा से भू का सारा भाजन या ताप नष्ट हो जाता है और ३ सभी उससे अपनी तृष्णा बुझा सकते हैं। फिर भी चातक उनमें से सिर्फ एक ही घूँट पानी पी लेता है। वह अपनी प्यास बुझाना ही नहीं चाहता क्योंकि प्यास बुझाने से दाता के प्रति अपना जो आकर्षण है वह कम हो जाने का उसे डर हैं। इसीलिए चातक ` स्वाती ` नक्षत्र में भी बहुत कम जल लेता है। बस ` एक घूँटक पानी `। यहाँ तुलसीदासजी ने ` स्वाती ` के प्रति चातक की अनन्यता प्रदर्शित करके सच्ची भक्ति के स्वरूप का सुन्दर वर्णन किया है और वे स्वयं भी राम के प्रति वैसे ही एकनिष्ठ हैं जैसे चातक ` स्वाती ` के प्रति।

तुलसीदासजी ने चातक की एकनिष्ठता को और भी तीव्र बनाया है। वे कहते हैं कि चातक पर मेघ गर्जन-तर्जन करता हुआ उसके शरीर पर ओले बरसाता है और कठोर बिजली भी गिरा देता है, तो भी चातक अपने आराध्य की समग्र प्रतारणाओं को सहर्ष सहन करता रहता है। उस वक्त वह मेघ को छोडकर कभी किसी दूसरी ओर देखता तक नहीं। इसके बारेमें दोहावली में लिखा है -

` उपल बरषि गरजत तरजि डारत कुलिस कठोर।
चितव कि चातक मेघ तजि कबहुँ दूसरी ओर।। `८

इसप्रकार तुलसी को भी रामरूपी श्यामघन का ही भरोसा है, उसी का बल है, उसी की आशा है और उसी का विश्वास है। अन्य किसीपर उनका भरोसा नहीं इसके बारेमें वे लिखते हैं -

` एक भरोसा एक बल एक आस विश्वास ।
एक राम घन श्याम हित चातक तुलसीदास ।।`[९]

तुलसीदासजी अपने सभी रिश्ते-नाते राम से मानते हैं । इसका कारण यह है कि राम भक्ति को वे सभी प्राणियों के लिए कल्याणकारी मानते हैं, उनकी राममक्ति में आत्मकल्याण के साथ लोककल्याण की भावना भी हमें दिखाई देती है । तुलसीदासजी सरलचित्त और जगत् का हित करनेवाले राम के एकनिष्ठ भक्त हैं । सभी के हित के लिए ही उन्होंने अपना काव्य रामनाम की भक्ति से जोड दिया है । राम भक्ति के बारेमें तुलसीदासजी ` रामचरितमानस ` में कहते हैं -

` एहि महँ रघुपति नाम उदारा । अति पावन पुरान श्रुति सारा ।
मंगल भवन अमंगल हारी । उमा सहित जेहि जपत पुरारी
भनिति विचित्र सुकवि कृत जोऊ राम नाम बिनु साहे न सोऊ ।।`[१०]

गोस्वामी तुलसीदासजी ने ईश्वर के अस्तित्व को भक्ति और प्रेम से मानव रूप में प्रकट करके मानव-समाज से उसका अटूट सम्बन्ध स्थापित करने के लिए ही भगवान को नर रूप में अपना नायक चुना है । वह नायक और कोई न होकर रामचंद्र ही है । उससमय के मूलत: ईश्वरवादी धार्मिक समाजपर ऐसे नायक के आदर्श चरित्र का गहरा प्रभाव पडना निश्चित था । साथ ही तुलसी ने दु:खों से पीडित मानव और उसकी दरिद्रता को ईश्वर के सम्मुख लाकर मानव समाज को दु:खहीन बनाने की शिकायत की थी ।

महात्मा तुलसीदासजी ने राम के प्राकृत, मानवीय आदर्शों की प्रमुखता देने के लिये ही राम के अभाव में हमें राम-नाम का अवलम्ब लेने को कहा है । राम-नाम के बारेमें वे कहते हैं -

` ब्रह्म राम ते नाम बड बरदायक वर दानि ।
रामचरित कोटि महँ लिय महेस जिय जानि ।।`[११]

तुलसीदासजी की धारणा यह थी कि राम-नाम का जाप करनेवाले राम के आदर्शों से प्रभावित होंगे । राम के मानवीय आदर्शों पर चलकर समाज कल्याणप्रद मार्ग का अवलंब करेगा इसलिए तुलसीदासजी ने राम के आदर्श चरित्र को ` रामचरितमानस` में प्रस्तुतकिया है ।

तुलसीदासजी ने अपने युग में जो कुछ अच्छा समझा जाता था, जो कुछ समाज में प्रचलित था उसे लेते हुए समाज को प्रकाश एवं सही प्रवाह देने का प्रयत्न राम के चरित्र द्वारा किया है ।

तुलसीदासजी कहते हैं कि जो बात मुझे कहनी है वही बात राम-कथा के बगैर समाज में कही जायेगी तो समुचित आकर्णण न प्राप्त करेगी, समुचित शोभा नहीं पायेगी, परंतु वह रामकथा के साथ पिरोई जाने से अधिक प्रभावशाली, शोभायमान और जनप्रिय बन जायेगी ।

तुलसीदासजी ने राम को उपास्य इसलिए चुना है कि उनके राम कलियुग के पापों के नष्ट करनेवाले हैं । राम कलियुग-रूपी साँपों के लिए मोर के समान हैं । और विवेक की अग्नि को प्रज्वलित करनेवाली लकडी के समान हैं । पापों में डूबे कलियुग को पापों से मुक्त करने के लिए रामकथा कामधेनु गौ के समान है । इस पृथ्वी पर रामनाम-रूपी अमृत-लहर मनुष्यों को निर्भय बनानेवाली और भ्रमों को नष्ट करनेवाली है । रामकथा नरक को समाप्त करनेवाली है और सभी का हित करनेवाली है ।

निष्कर्ष :

तुलसीदासजी ने राम को ही उपास्य इसलिए माना कि तत्कालीन परिस्थिति और समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति करने की शक्ति राम के सिवा और किसी में उन्हें नहीं दिखाई दी । तुलसी को ऐसा विश्वास था कि राम के मानवीय आदर्शोंपर चलकर ही समाज कल्याणप्रद मार्ग का अवलंब करेगा । राम का चरित ऐसा था, जिसमें विलास की जरा भी गंध नहीं थी, इसलिए समाज का उचित मार्ग दर्शन, कर्तव्य के प्रति निष्ठा और बिगडी हुई जीवनस्थली को ठीक बना देने की क्षमता उसमें हैं ।

तुलसीदासजी का प्रमुख हेतु ` स्वात: सुख ` के साथ ` सर्वजन हित ` भी था और वह कार्य राम-कथा के सिवा संभव ही नहीं ऐसा उनका विश्वास था ।

इसप्रकार तुलसीदासजी ने राम को उपास्य मानकर जनता की नस-नस में रामचरित प्रवाहित करने का प्रयास किया है । परिणाम स्वरूप वे जनता के प्रत्येक कर्म में राम का रूप देखना चाहते थे, सारे समाज का मंगल इसीमें निहित है, ऐसा मानते थे ।

संदर्भ सूची

१. ` रामचरित मानस `
दोहा ५०-१ पृ. ५९
हनुमान प्रसाद पोद्दार
गीता प्रेस, गोरखपुर
१३ वा संस्करण २०२० संवत

२. गीता तत्व दर्शन
४,७-८ पृ. १५
ग.वा. कवीश्वर
तत्वज्ञान प्राध्यापक, होळकर कॉलेज, इंदूर

३. ` रामचरित मानस `
दोहा १, १२० पृ . ३-४
हनुमान प्रसाद पोद्दार
गीता प्रेस, गोरखपुर
१३ वा संस्करण २०२० संवत

४. दोहावली
दोहा २५१
हनुमान प्रसाद पोद्दार
गीता प्रेस गोरखपुर, २०३१ संवत

५. रामचरित मानस
उ.का. ७३ (ख)
हनुमान प्रसाद पोद्दार
गीता प्रेस, गोरखपुर
१३ वा संस्करण २०२० संवत

६. हिंदी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि
डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना
विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
७ वा संस्करण, १९७९

७. दोहावली
दोहा २८७
हनुमान प्रसाद पोद्दार
गीता प्रेस, गोरखपुर
२०३१ संवत

८. ` वहीं `
दोहा २८३

९. ` वहीं `
दोहा १०९

१०. रामचरित मानस
हनुमान प्रसाद पोद्दार
गीता प्रेस, गोरखपुर
४३ वा संस्करण, २०२१ संवत

११. ` वही `
बा.का.